

Nature of Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान 'शिक्षा' तथा 'मनोविज्ञान' दो स्वतंत्र शब्दों के मेल से बना है। यह तो स्पष्ट ही है कि शिक्षा से सम्बद्ध मनोविज्ञान को ही शिक्षा मनोविज्ञान कहते हैं। **स्कीनर (Skinner)** के अनुसार "शिक्षा-मनोविज्ञान की वह शाखा है जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अध्ययन करती है।" इन परिभाषाओं से यही संकेत मिलता है कि शिक्षा-मनोविज्ञान का सम्बन्ध सीखने-सिखाने जैसी प्रक्रिया से ही है। शिक्षा के आधुनिक अर्थ की दृष्टि से यह विचार संकुचित प्रतीत होता है। वस्तुतः देखा जाये तो शिक्षा और साक्षरता को एक मानना ही भूल है। यह सही है कि साक्षरता शिक्षा का प्रमुख अंग है, परन्तु सब-कुछ नहीं। यदि यह सही नहीं तो अकबर को हम क्या कहें ? कबीरदास को क्या मानें ?- शिक्षित या अशिक्षित ? यदि अशिक्षित मानें तो किसे शिक्षित कहें ? क्या उन्हें शिक्षित कहेंगे जो कहाँ थुकें, कहाँ शौच करे आदि साइनबोर्डों को पढ़ते हुए चलते हैं पर मनुष्यता के व्यापार की कोई झाँकी उनके व्यक्तित्व से नहीं मिलती ? इस सम्बन्ध में गाँधी जी ने कहा है और खूब कहा है कि "साक्षरता शिक्षा का न तो प्रारम्भ है और न अन्त। यह मात्र एक साधन है जिसके द्वारा स्त्री-पुरुष शिक्षित किए जा सकते हैं।" इन त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मनोविज्ञान की समग्र तथा संतोषप्रद परिभाषा यह दी जा सकती है- "शिक्षा मनोविज्ञान व्यावहारिक मनोविज्ञान का एक रूप है जो मापन-विधियों, विश्लेषण तथा निरीक्षण द्वारा व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक क्षमताओं को निर्धारित करता है और प्राप्त अनुसंधानों के आधार पर व्यक्ति की समुचित शिक्षा के लिए संकेत और सलाह देता है।"

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाओं के विश्लेषण से इसका स्वरूप स्पष्ट होता है। इसके स्वरूप या विशेषताओं को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है :-

1. **शिक्षा मनोविज्ञान एक व्यवहारपरक विज्ञान है (Educational Psychology is an applied science) :-** मनोविज्ञान के दो मुख्य प्रकार हैं (i) सैद्धान्तिक मनोविज्ञान (theoretical psychology) तथा (ii) व्यावहारिक मनोविज्ञान (applied psychology)। सैद्धान्तिक मनोविज्ञान का अर्थ मनोविज्ञान की उस शाखा से है जो व्यक्ति और जीवों के अनुभव एवं व्यवहार का अध्ययन करके सामान्य नियमों का निर्माण करता है। सामान्य मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान, बाल-मनोविज्ञान, आदि की गणना इसी शाखा में होती है। दूसरी ओर, व्यावहारिक मनोविज्ञान उस शाखा को कहते हैं जो सैद्धान्तिक मनोविज्ञान द्वारा बनाए गए नियमों का उपयोग जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यावहारिक सफलता या उपयोगिता के लिए करती है। शिक्षा मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान, आदि की गणना इसी शाखा के अन्तर्गत होती है। स्पष्टतः शिक्षा-मनोविज्ञान व्यावहारिक मनोविज्ञान की शाखा है। कारण यह कि यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में करके शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करता है।

2. **शिक्षा मनोविज्ञान एक समर्थक विज्ञान है (Educational psychology is positive science):-** विज्ञान के मुख्य दो प्रकार हैं जिन्हें समर्थक विज्ञान तथा आदर्श-सूचक विज्ञान कहते हैं। समर्थक विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं, जो किसी विषय का अध्ययन उसी रूप में करता है, जिस रूप में वह होता है। इसके विपरीत आदर्श-सूचक विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं, जो किसी विषय का अध्ययन उस रूप में करता है, जिस रूप में उसे होना चाहिए। शिक्षा-मनोविज्ञान वास्तव में किसी विषय का अध्ययन उसी रूप में करता है, जिस रूप में वह होता है। अतः यह एक समर्थक विज्ञान है। अपने इस स्वरूप के कारण यह विज्ञान वास्तव में भौतिकी, रसायनशास्त्र आदि की श्रेणी में आता है। इस आधार पर यह दर्शनशास्त्र, नैतिकशास्त्र, आदि आदर्श-सूचक विज्ञान से भिन्न है।
3. **शिक्षा मनोविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान है (Educational psychology is a social science):-** शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप कुछ ऐसा है कि इसकी गणना आजकल समान विज्ञान के रूप में भी होने लगी है। समाज विज्ञान तथा मानव विज्ञान की तरह शिक्षा-मनोविज्ञान भी मानव का अध्ययन करता है तथा बालक के समाजीकरण के विभिन्न पक्षों का आकलन करता तथा उसको उन्नत बनाने के उपायों का उल्लेख करता है।
4. **शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध बालक के मानसिक विकास से है (Educational psychology is concerned with mental development of the child) :-** शिक्षा-मनोविज्ञान मानव के मानसिक विकास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। बौद्धिक विकास, अभिवृत्ति विकास, आदि के समुचित विकास के लिए शिक्षा मनोवैज्ञानिक अनुकूल उपायों का सुझाव देते हैं।
5. **शिक्षा मनोविज्ञान बालक के शारीरिक विकास से सम्बन्ध रखता है (Educational psychology is concerned with physical growth of the child) :-** शिक्षा मनोविज्ञान मानव के शारीरिक विकास का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। बालकों के शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों पर यह विज्ञान प्रकाश डालता है तथा इसके समुचित-विकास का सुझाव देता है।
6. **शिक्षा मनोविज्ञान बालक के सामाजिक विकास से सम्बन्ध रखता है (Educational Psychology is concerned with social development of the child) :-** शिक्षा मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मानव के सामाजिक विकास का अध्ययन करता है। बच्चे सामाजिक या आसामाजिक क्यों और कैसे बन जाते हैं, उन्हें सामाजिक मानव कैसे बनाया जा सकता है, इन सारी बातों का अध्ययन यह है मनोविज्ञान करता है।

7. शिक्षा मनोविज्ञान बालक के संवेगात्मक विकास से सम्बन्ध रखता है (**Educational psychology is concerned with emotional development of the child**) :- शिक्षा मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो मानव के संवेगात्मक विकास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करता है। शिक्षा-मनोवैज्ञानिक संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाली कारकों को निर्धारित करता है, तथा संवेगों के समुचित विकास के उपायों का सुझाव देता है।
8. शिक्षा मनोविज्ञान बालक के नैतिक तथा अध्यात्मिक विकास से सम्बन्ध रखता है (**Educational psychology is concerned with moral and spiritual development**) :- शिक्षा-मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो मानव के नैतिक तथा अध्यात्मिक विकास का अध्ययन करता है तथा इसके समुचित विकास का मार्गदर्शन भी करता है। महात्मा गाँधी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि बालकों में नैतिकता तथा अध्यात्मिकता को विकसित करना शिक्षा-मनोवैज्ञानिकों का एक मुख्य दायित्व है।
9. शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण तथा अध्यापन का विज्ञान है (**Educational psychology is the science of learning and teaching**) :- जैसा कि स्किनर (Skinner) ने दावा किया है, शिक्षा-मनोविज्ञान में शिक्षण तथा अध्यापन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाता है। सीखने के अर्थ, इसके प्रकार, इसके सिद्धान्त, प्रभावशाली शिक्षा के निर्धारक आदि का अध्ययन यह मनोविज्ञान करता है। इसी प्रकार अध्यापन के विभिन्न पहलुओं का यह अध्ययन किया जाता है तथा सफल अध्यापन के उपायों का सुझाव दिया जाता है।
10. शिक्षा मनोविज्ञान एक बढ़ता हुआ विज्ञान है (**Educational psychology is a growing science**) :- शिक्षा-मनोविज्ञान वास्तव में एक ऐसा विज्ञान है, जिसका क्षेत्र निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसका सम्बन्ध नये शोधों से है। इसके क्षेत्र के अन्तर्गत लगातार नये-नये शोध हो रहे हैं और जैसे-जैसे शोधों के परिणाम उपलब्ध होते जा रहे हैं, शिक्षा-मनोवैज्ञानिकों की सूझ बालक के स्वरूप को समझने में बढ़ती जा रही है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा-मनोविज्ञान का स्वरूप काफी व्यापक तथा जटिल है।